







# संपादकीय देश के चुनाव में चंद सूबे कर देंगे फैसला

## भ्रामक प्रचार से बाज आना चाहिए

देश में हिन्दुओं की आबादी में कमी आ रही है। धार्मिक अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण (1950-2015) दस्तावेज में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने खुलासा किया है। इसमें हिन्दू आबादी के 7.82 फीसद कम होने के साथ मुसलमानों की 43.15 फीसद बढ़ने की बात की गई है। सिखों की आबादी 1.24 फीसद से बढ़कर 1.85 फीसद तथा इसाइयों की 2.24 फीसद से बढ़ कर 2.36 फीसद हो गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार बौद्ध भी बढ़े हैं, जबकि जैन व पारसियों की संख्या घटी है। यूं तो जनसंख्या के आंकड़े जनगणना के माध्यम से आते हैं। जो 2011 के बाद से नहीं हो सकी है। जनगणना 2021 में प्रस्तावित थी, जो करोना महामारी के कारण स्थगित कर दी गई थी। इस अध्ययन में बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक आबादी में आए उतार-चढ़ाव के अंतरराष्ट्रीय रूपाना का पता लगाने के लिए 167 देश शामिल थे, जिसके मुताबिक भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम आबादी की बढ़ोत्तरी सबसे ज्यादा हुई। जबकि बांग्लादेश में 10 फीसद व पाकिस्तान में 10 फीसद मुसलमानों की आबादी में बढ़त देखी गई। देश में मौजूदा वर्क में लोक सभा चुनाव चल रहे हैं, जिसमें सत्ताधारी दल पहले ही धार्मिक आधार पर बयानबाजियां करने और समाज में दरारें पैदा करने में हिचक नहीं रहा है। ऐसे में इस रिपोर्ट का प्रचार खास समुदाय को निशाना बनाने में सहायक साबित हो सकता है। विपक्ष भी इसे चुनावी चाल कह आरएसएस का एंडेंच चलाने का आरोप लगा रहा है। वास्तव में हम धर्मनिरपेक्ष देश हैं, जिसमें सभी धर्मों का बराबर सम्मान किया जाना और उनके साथ सहिष्णुता बरतना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। मुसलमानों की आबादी बढ़ने के कारणों में यूं तो उनकी चार शादियां, धर्मांतरण व धुसरपैठ को दोषी ठहराया जा रहा है, जबकि इसके पीछे अशिक्षा व जागरूकता की कमी अधिक है। विशेष समुदाय पर देश की जनसांख्यिकी बदलने के प्रयासों का आरोप मढ़ा तर्फ उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस हकीकत को झुटलाया नहीं जा सकता कि दुनिया भर में मुसलमानों की आबादी सबसे तेजी से बढ़ रही है। बीते सौ वर्षों में वे 12.5 फीसद से बढ़कर 22.5 फीसद हो चुके हैं। इसलिए केवल भारत में मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या के लिए भ्रामक प्रचार से बाज आना चाहिए। साथ ही उन्हें जागरूक करने और सेहत संबंधी फायदों के विषय में आगाह करने के प्रयास करने चाहिए।

नारायण रामचंद्रन

# विशेष लेख

## विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही

प्रह्लाद सबनानी

---

Published online in Wiley Online Library (wileyonlinelibrary.com) at <http://onlinelibrary.wiley.com> © 2012 The Authors  
Journal compilation © 2012 Association for Child and Adolescent Mental Health.

दिनांक 1 मई, 2024 का अप्रैल, 2024 माह में वस्तुएँ एवं सवार कर (जीएसटी) के संग्रहण से संबंधित जानकारी जारी की गई है। माह

अप्रैल 2024 के दौरान जीएसटी का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रु पये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्त वर्ष 2022 में जीएसटी का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रु पये रहा था, जो वित्त वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ हो गया एवं वित्त वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रु पये के स्तर को पार कर गया। अब तो अप्रैल, 2024 में 2.10 लाख करोड़ रु पये के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे आधार स हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में हिचकिचाहट रहती थी और अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी, परंतु केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित रिकार्ड बना रहा है। वैश्विक स्तर

# बंगाल में खोई जमीन तलाशता वाम मोर्चा

जयत धाषाल

दिनांक 1 मई, 2024 को अप्रैल, 2024 माह में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के संग्रहण से संबंधित जानकारी जारी की गई है। माह अप्रैल 2024 के दौरान जीएसटी का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रुपये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्त वर्ष 2022 में जीएसटी का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रुपये रहा था, जो वित्त वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ हो गया एवं वित्त वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रुपये के स्तर को पार कर गया। अब तो अप्रैल, 2024 में 2.10 लाख करोड़ रुपये के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में हिचकिचाहट रहती थी और अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी, परंतु केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित रिकार्ड बना रहा है। वैश्विक स्तर

करन वाला माकपा आगे उसका सहयोग वाम पाटया बिल्कुल हाशिये पर चली गई हैं। साल 2021 के विधानसभा चुनाव में वाम मोर्चे ने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया था, उन्होंने 'ईंडियन सेक्युलर प्रंट' नाम की एक मुस्लिम पार्टी को भी इस गठबंधन का हिस्सा बनाया। नतीजा यह हुआ कि ईंडियन सेक्युलर प्रंट का तो एक उम्मीदवार इस चुनाव में कामयाब रहा, पर वाम दलों और कांग्रेस का एक भी प्रत्याशी चुनाव जीत न सका। ऐसे में, आज का सबसे बड़ा सवाल यही है कि इस आम चुनाव में वाम मोर्चे, खासकर माकपा की क्या रणनीति है? कोलकाता में अलीमुद्दीन स्ट्रीट पर माकपा का मुख्यालय है। यहां पर पार्टी के वरिष्ठ नेता विमान बोस रहते हैं। मोहम्मद सलीम सीपीएम के राज्य सचिव बनाए गए हैं। पार्टी में यह बेहद अहम पद है। ऐसे में, सवाल उठता है कि आखिर इतने वर्षों के बाद मुस्लिम समाज के एक नेता को माकपा ने क्यों राज्य सचिव बनाया? इसके पहले मुजफ्फर अहमद, जिनको प्यार से कॉमरेड 'काका बाबू' पुकारते थे, को इतना सम्मान मिला था। काका बाबू पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। काका बाबू के बाद हमेशा बंगाली हिंदू ही सीपीएम के नेता बनते रहे हैं। यह कोई ढकी-छिपी बात नहीं है कि पश्चिम बंगाल में लगभग 30 फैसली मुस्लिम मतदाता हैं और भाजपा वहां आक्रामक हिंदुत्व का कार्ड खेल रही है। इस कार्ड ने उसे यहां जबरदस्त कामयाबी भी दिलाई है। याद कीजिए, एक समय था, जब भाजपा कोलकाता नगर निगम चुनाव में महज दो

साट जात सका था, तब लालकृष्ण आडवाणा न खुश जाहिर करते हुए बाकायदा बयान दिया था कि यहामा प्रसाद मुखर्जी के सूबे में हमारा खाता खुल गया है। कोलकाता में भाजपा कार्यकर्ताओं ने खूब गुलाल उड़ाए थे, मानो कोई बड़ी जीत मिली है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में पार्टी की सफलता का आलम यह है कि पिछले आम चुनाव में राज्य की 42 लोकसभा सीटों में से 18 पर जीत हासिल करके भाजपा ने न केवल सबको चौंका दिया, बल्कि अब वह विधानसभा में मुख्य प्रतिपक्ष है। साफ है, बंगाल में सीपीएम की जगह भाजपा ने हथिया ली है। मोदी का राष्ट्रीय नेतृत्व का अपना आभामंडल तो है ही, राज्य में नेता प्रतिपक्ष शुर्भेंदु अधिकारी और राज्य भाजपा के अध्यक्ष सुकांत मजूमदार, दोनों काफी मेहनत भी कर रहे हैं। माकपा को यह लगने लगा है कि इंडियन सेक्युलर प्रंत और कांग्रेस के साथ गठजोड़ करने से भाजपा को ही फयदा होता है, क्योंकि उसका हिंदू वोट भाजपा को और मुस्लिम आधार इंडियन सेक्युलर प्रंत को ट्रांसफर होने लगा है, लिहाजा इस आम चुनाव में उसने कोई गठबंधन नहीं किया। अलवता, उत्तरी बंगाल में उसने कांग्रेस के साथ सीटों का तालमेल जरूर किया है। पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चे की दुविधा यह है कि वह अपना सबसे बड़ा शत्रु किसको माने? स्वाभाविक राजनीतिक दुश्मन तो तृणमूल कांग्रेस ही है, क्योंकि ममता ने ही उसको सत्ता से बेदखल किया। माकपा इस बात को भूल नहीं सकता। पर सदशखाला का घटना से लकर ममता सरकार में सामने आए भ्रष्टाचार के मुद्दों, मंत्रियों की गिरफतारी को भाजपा जितने जोर-शोर से उठा रही है, उन पर भी माकपा खामोशी नहीं बरत सकती, क्योंकि इससे उसकी विपक्ष की भूमिका प्रभावित होती है और यदि वह आक्रामक विरोध करती है, तो भाजपा विरोधी नैरेटिव को नुकसान पहुंचता है। 2019 और 2021 में माकपा की आंतरिक रणनीति थी कि 'पहले राम बाद में वाम।' यानी राज्य में अभी भाजपा को मजबूत होने दो, बाद में हम उसे हटाएंगे, फिलहाल ममता से निपटना जरूरी है। मगर इस रणनीति को लेकर इस बार माकपा में मतभेद उभर आया। इस रणनीति के विरोधियों का कहना है कि यदि एक बार भाजपा कोलकाता की सत्ता पर काबिज हो गई, तो अगले तीस वर्षों तक माकपा के लिए सत्ता में लौटना सपना हो जाएगा। इसलिए माकपा दिग्भ्रमित है कि उसका मुख्य दुश्मन कौन है? उसकी एक बड़ी परेशानी यह भी है कि कार्यकर्ता-स्तर पर ममता विरोधी अधिक हैं, जबकि ऊपरी स्तर पर भाजपा के मुख्यालिफ नेता अधिक हैं। वे सांप्रदायिक मुद्दों को कहीं अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। लिहाजा इस बार यह देखने वाली बात होगी कि माकपा किसके वोट काटती है? पिछले चुनाव में उसका वोट प्रतिशत घटा था और भाजपा को इसका फयदा मिला था। अगर इस बार सीपीएम कुछ वापसी करती है और हिंदू वोटों को अपनी तरफ खींचती है, तो इससे भाजपा का प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

# कर्नाटक की राह में प्रज्वल रेवन्ना मोड़े

**एस श्रीनिवासन**

संबोधी जुबान पर सवाल है कि क्या पन-ड्राइवर सेक्स स्कैंडल और लिंगायत समाज (उत्तरी कर्नाटक में भगवा दल का पारंपरिक वोट बैंक) में उत्साह की कमी से भाजपा की संभावनाओं पर असर पड़ सकता है? दरअसल, जनता दल (सेक्युलर) के संरक्षक एचडी देवगोड़ा के पोते प्रज्ञवल रेवना का सेक्स स्कैंडल एक अप्रत्याशित झटके की तरह पार्टी के सामने आया है। एनडीए के बड़े नेता रेवना के विदेश भागने के लिए सूबे की सिद्धारमैया सरकार पर उंगली उठाकर विवाद से बचने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह मसला खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। जैसे-जैसे विशेष जांच दल (एसआईटी) की कार्रवाई आगे बढ़ रही है, गौड़ा परिवार के अंदर की सड़ाधं बाहर आ रही है। जनता दल (सेक्युलर) के लिए शर्मिंदीगी की बात यह ही है।

A portrait of a man with dark hair and a well-groomed beard. He has a small orange tilak on his forehead. He is wearing a white kurta and a green and yellow sash (mehandi) around his neck. The background is a blue corrugated metal wall.

चुनाव हो चुके थे, लेकिन इसका असर शेष 14 निर्वाचन क्षेत्रों पर पड़ने की आशंका है, जो कर्नाटक के उत्तरी हिस्से की सीटें हैं। पहले चरण का मतदान राज्य के दक्षिणी हिस्से में हुआ था, जहां बोकालिंगा समुदाय प्रभावी है और देवगोड़ा का पारंपरिक बोटर है। कर्नाटक में भाजपा ने यह सोचकर जनता दल (सेक्युलर) के साथ गठबंधन किया था कि इससे उसे लाभ मिलेगा। मगर रिपोर्टों के मुताबिक, बोकालिंगा समुदाय के ही डीके शिवकुमार (उप-मुख्यमंत्री) की मदद से कांग्रेस यहां भाजपा को टकर दे रही है। इसीलिए माना जा रहा है कि इस बार 2019 की तरह भाजपा को आसानी से शायद ही सफलता मिल सकेगी। विधानसभा चुनाव में अप्रत्याशित जीत हासिल करने वाली कांग्रेस ने भाजपा पर दबाव बनाए रखा है। उसने अपने जमीनी कार्यकर्ताओं में एक नई जान पूँक दी है और अपने सभी विधायकों-मंत्रियों अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में बोट हासिल करने का लक्ष्य दे दिया है। एनडीए नेताओं ने यह कहकर मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास किया है कि समय पर

कार्वाई करने में सिद्धारमैया सरकार विफल रही और प्रज्वल को विदेश भागने का मौका मिल गया। मगर इसका उल्टा असर तब हुआ, जब प्रज्वल के एक पूर्व ड्राइवर का विस्मेटक वीडियो वायरल हो गया। उस ड्राइवर ने कहा कि 15 साल तक परिवार की सेवा करने के बाद उसने एक वर्ष पहले नौकरी छोड़ दी। उसका दावा है कि उसने पेन ड्राइव की एक कॉपी स्थानीय भाजपा नेता देवराज गौड़ को दी थी, किसी कांग्रेस नेता को नहीं। देवराज ने दिसंबर में इस मुद्दे पर प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की थी और रेवती की उम्मीदवारी का भी वह कड़ा विरोध करते रहे। देवराज के मुताबिक, उन्होंने इस वीडियो की जानकारी भाजपा के राज्यस्तरीय नेताओं के साथ-साथ कई केंद्रीय मर्जियों को भी दी थी। जाहिर है, इससे कांग्रेस को प्रधानमंत्री व गृह मंत्री को घेरने का पूरा मौका मिल गया है कि उन्होंने समय पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की? इस मामले के जल्द समापन की संभावना नहीं दिखती, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कई अन्य नेता भी इसमें शामिल हैं। जनता दल (सेक्युलर) मानो धराशायी होने जा



**संक्षिप्त समाचार**  
युवती से मोबाइल लूटने  
वाला एक गिरफ्तार

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। पिछले दिनों सायकल सवार एक युवती का मोबाइल लूट कर फरार होने वाले तीन आरोपियों में से एक आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है तथा उसके पास से लूट का मोबाइल फोन जब लिया है। वहीं अन्य दो फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है। बता दें कि कुर्लाभाट निवासी भूमिका जामुलकर ने थाना डॉगरगढ़ में शिक्षायत दर्ज कराई थी कि वह 10 मई को दोपहर 12:30 बजे सायकल में डॉगरगढ़ से अपने घर जा रही थी रस्ते में सामने तपके पास एक मोटर सायकल में तीन बादमाश आये और उसे सायकल सहित धका देकर गिरा दिया और उसके मोबाइल फोन और आधार कार्ड को लूट कर फरार हो गये। शिक्षायत पर पुलिस ने धारा- 392, 34 भादवी का अपराध दर्ज कर विवेचना में लिया था। सामले में पुलिस अधिकारी राजनांदगांव मोहित गर्ग एवं अति पुलिस अधीक्षक महापांड शर्मा व त्रिविलास अनुविधायी अधिकारी डॉगरगढ़ अधिष्ठित कुंजाम से विवेचना हेतु दिशा-निशा प्राप्त हुआ था जिस पर तत्काल कार्यवाही करते हुए थाना पुलिस अलम-अलग टीम बना कर आरोपियों के पता तलाश में जुट गये जिससे एक आरोपी दीपक बाधमारे पिता मुकेश बाधमारे उम्र- 21 साल साकिन रजनगर बाड़ नंबर- 20 डॉगरगढ़ निवासी को पकड़कर पुछताछ करते पर अब अपने दो खातों के साथ सप्लायर कर लूट की घटना को अंजाम देना बताया जिसके पास से पुलिस ने लूटे गए पीड़ितों के मोबाइल फोन को जस कर लिया तथा आरोपी को विविध गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। वहीं सामले में शामिल दो अन्य फरार आरोपियों की पतासाजी की जा रही है।

**दंतैल हाथियों से रहें  
दूर, वन विभाग ग्रामीणों  
को कर रहा सतर्क**

बलरामपुर(विश्व परिवार)। वन मंडल बलरामपुर के राजपुर वन परिक्षेत्र के बीट रेवतपुर खासबिन्दी, जामदाहर कुदी, बड़ली, चाची, धंधारु, अखोरा जवाखार में तीन नर दंतैल जंगलों हाथी लगातार विचारण कर रहे हैं। हाथियों से ग्रामीणों को दूरी बाहर रहने एवं सावधान की समझाइस देते उप वन मण्डलाधिकारी राजपुर रिविलर क्रीवासत्र एवं वन परिक्षेत्राधिकारी महाजन लाल साहू राजपुर मय स्टाफ सहित लगातार हाथी प्रभावित क्षेत्र में दौरा कर लोगों को समझाइस दे रहे हैं की जिस रास्ते से हाथी जा रहे हैं उनके रास्ते में अवश्य उत्तर ना करें। पटाखा ना फेंडे उनके समाने टॉच ना जाएं। इससे हाथी उग्र हो जाते हैं जिससे वाही उग्र हो जाते हैं विवरण देते हैं जो दुखदाह जाता है। तेंदु तपता संग्रहण करने वाले ग्रामीणों अमजदों को जिस इलाके में हाथी विचारण कर रहे हैं उस तफना जाए तथा हाथियों से दूरी बनाए रखें। लगातार सलाह दे रहे हैं, वन अधिकारियों द्वारा बताया जा रहा है की सरकार द्वारा नियम बनाए गए हैं। उचित मुवावजा भी दिया जाता है जन हानि, धन हानि होने पर अधिकारियों का पूरा प्रयास रहता है की जन हानि ना होने पाए इसलिए हाथियों से उचित दूरी बनाए रखें।

**चर्चा का विषय बना नाग  
का जोड़, दर्शन करने  
उमड़ रही भीड़**

कोरिया(विश्व परिवार)। जिले के ग्राम चारपारा में पिछले कुछ दिनों से एक अद्भुत नजारा देखने को मिल रहा है। यहां एक तालाब में गांव के कुछ लोगों ने नाग को जोड़े को देखा। एक नाग पूरे तालाब में धूमपाणी के पास आ गया। यह देख लोगों ने उसे दूध पिलाया। इसके बाद से तो नाग बड़े आराम से लोगों को देखते ही उनके करीब आ जाता है। अब चारपारा गांव आसपास के इलाके में इस साव को बजाए से चर्चा में आ गया है। बड़ी संख्या में लोग अब उसकी पूजा करने लगे हैं। कोई दूध पिला रहा है तो कोई धूमर आरोध मांग रहा है। नाग भी अपने जीवन स्तर ऊंचा उठाने का मौका दिया है। जिले के दो वनमंडल के अंतर्गत तेंदूपता संग्रहण का काम जोर-शोर से चर्चा के बीच हो रहा है तत्काल साफ सफाई करने की जरूरत है। नपा अध्यक्ष मनहरण कौशिक ने उके बातों व समस्याओं को जोड़ा विषय के बाहर नहीं दे रखा है। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों तक रहा है। बता दें, ग्राम चारपारा के रहने वाले के अमरसिंह ने नाग को गले में उठाकर ले जाने के कोशिका तेज लग रहा है कि वह लोगों के बीच ही रहना चाहता है। खास बात यह है कि, तालाब में धूम कर ग्रामीणों के पास नाग खुद आ जाते हैं। लेकिन वो हर किसी के हाथ से दूध नहीं पीते हैं। कुछ ग्रामीण नाग को छू लेते हैं तो उनके काटते रक्षा करते हैं। ये स्लिसिला लगभग 15 दिनों त

## व्यापार समाचार

### एफआईआई की बिकवाली का असर लार्ज कैप शेयरों पर

नई दिल्ली(एजेंसी)। शेयर बाजार में लार्ज कैप शेयरों का परफॉर्मेंस एफआईआई की बिकवाली से प्रभावित हो रहे हैं। जियोंजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि अधी चौथी तिमाही की नीति का मौसम चल रहा है, इसमें निवेशकों को अपना पोर्टफोलियो इसी आधार पर बनाना चाहिए। बाजार बैंक ऑफ इंग्लैंड की नीति और यूरोजॉन के जीडीपी अंकड़ों को लेकर भी सतर्क रहा। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि हाई वैल्यूशन और चुनाव संबंधी किसी झटके के कारण बाजार में कुछ हद तक करेक्षण हो सकता है। उन्होंने कहा कि एफआईआई बाजार में बिकवाली करते होंगे, जिससे लार्ज कैप शेयरों के प्रदर्शन पर असर पड़े। एम्पिड से थोड़ी बिकवाली की आय और तेल की मौसमों में सुधार के कारण सप्ताह के दीरांग घेरेलू बाजार की सकारात्मक शुरुआत हुई। उन्होंने कहा, हालांकि हाई इम्प्लेशन की स्थिति जारी रहने की फड़ की चेतावी के चलते घेरेलू बाजार में करेक्षण होने लगा। अटो कंपनियों की अच्छी कमाई के कारण सेक्टर का प्रदर्शन थोड़ा बेहतर रहा। उन्होंने कहा, इसके अलावा, चौथी तिमाही के सकारात्मक नीतियों और बिजली की मांग में बढ़ोतारी के कारण बैंकों और पावर सेक्टर में हलचल दिखाई दे रही है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के खुदरा अनुसंधान प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा हमें उम्पिद है कि बाजार व्यापक दायरे में मजबूत होगा।

### एकस की सख्ती: अप्रैल में भारत में 1.8 लाख से ज्यादा अकाउंट्स किए बैन

नई दिल्ली(एजेंसी)। एलन मस्क द्वारा संचालित एक्स कॉर्पो ने 26 मार्च से 15 अप्रैल के बीच भारत में 184,241 अकाउंट्स पर बैन लगा दिया। इनमें जातीय अकाउंट बाल यैन शेषण और गैर-सहमति नाना की बढ़ावा देने वाले थे। माइक्रो-व्हाइटिंग प्लेटफॉर्म के देश में आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए 1,303 अकाउंट्स को भी हटा दिया। कुल मिलाकर एक्स ने इस अवधि में 185,544 अकाउंट्स पर बैन लगाया। एक्स ने नए आईटी नियम, 2021 के अनुपालन में अपनी मासिक रिपोर्ट में कहा, उसे अपने शिकायत निवारण तंत्र (ग्रीवेंस रिड्डिम एक्सेस) का माध्यम से एक ही समय सीमा में भारत में यूजर्स से 18,562 शिकायतें प्राप्त हुईं। इसके अलावा, कंपनी ने 118 शिकायतें पर कार्रवाई की जो अकाउंट स्पेशेंशन (निलंबन) के खिलाफ प्रीमियर लीग के मैच में दिल्ली कैपिटल्स के कसान ऋषभ पंत निलंबन के कारण इस मैच से बाहर रहे। पंत को इंडियन एक्सप्रियर लीग के मैजिस्ट्रेट सभा में नियन बार धीमी ओवर गांव के कारण को एक मैच का निलंबन ज्ञालना हुआ है। राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ सात मैच के दिल्ली कैपिटल्स की 20 रन की जीत के दौरान आचार सहित के उल्लंघन को पतल दिया। शेयर रिपोर्ट किए गए अकाउंट्स निलंबित रहे होंगे। हमें इस रिपोर्टिंग अवधि के दौरान अकाउंट्स के बारे में सामान्य सवालों से संबंधित 105 अनुरोध मिले। भारत से अधिकांश शिकायतें प्रतिबंध उल्लंघन (7,555), इसके बाद धृण्णित आचरण (3,553), संवेदनशील व्यापक सामग्री (3,335) और दुव्यवहार/उर्पीड़न (2,402) के बारे में थीं।

### कलर्स दर्शकों को अपने नए प्रेरणादायक नाटक 'ख्यूबसूरत' के साथ अजेय जज्बे की एक्सप्रेस में शामिल होने की दावत देता है

मुंबई। सभी लोग ध्यान दें! कलर्स 'ख्यूबसूरत' के आगमन का सक्रिय दें रहा है, जो एक दिल खुल लेने वाली कहानी है। यह दर्शकों को मुंबई की भावना के बारे में बढ़ा उछल देखने को मिलता है। 2019 की बिक्री हुई थी और जिसमें बिकने वाली थर्मो लोम की संख्या 7 प्रतिशत थी, जो कि 2024 की पहली तिमाही में बढ़कर 21 प्रतिशत हो चुकी है। इस दौरान बजट थर्मो या अफोर्डेबल होम की बिक्री में 20 प्रतिशत की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी है। एक चॉल में रहने वाली नव्या शहर की गणनाचुंबी इमारतों जितनी ऊँची आकांक्षाओं के साथ खड़ी है। परिवार में वह एकमात्र संवाली है और इस कारण अपने पिता की अस्तीकृति के बावजूद वह कुछ बड़ा करना चाहती है। अपने आस-पास के लोगों द्वारा उपकी त्वचा के रंग को लेकर किए जाने वाले उन्हें से विचलित है बिना नव्या नहीं पर ले जाने के बाद कठिनी है। चैनल सपनों के लिए एक साधारण लड़की नव्या के प्रति आकर्षित करती है। जिसका जीता का जज्बा (जुनून) उस शहर की धड़कन की तरह अजेय है, जिससे वह जुड़ी

